ISSN: ISSN: 2583-5149 | Special Edition Vol. 2 | March 2026

श्रीमद्भगवद् गीता : जीवन और कार्य के लिए व्यवहारिक मार्गदर्शिका

डॉ. मंजुला जे. वीरडिया
एसोसिएट प्रोफेसर
श्रीमती ए पी पटेल आर्ट्स एन्ड स्व. श्री
एन.पी.पटेल कॉमर्स कॉलेज,नरोडा, अहमदाबाद,गुजरात

सारांश

श्रीमद् भगवद् गीता भारतीय ज्ञान-परंपरा का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण दार्शनिक ग्रंथ है, जो मानव जीवन के नैतिक, मानसिक, आध्यात्मिक तथा व्यावहारिक पक्षों का समन्वित मार्गदर्शन प्रस्तुत करता है। यह ग्रंथ महाभारत के युद्धक्षेत्र में उत्पन्न अर्जुन-विषाद के समाधान के माध्यम से मनुष्य के आंतरिक संघर्षों का समाधान करता है। आधुनिक युग में व्यक्ति कार्य-दबाव, मानसिक तनाव, नैतिक द्वंद्व तथा उद्देश्यहीनता जैसी समस्याओं से जूझ रहा है। ऐसे समय में गीता का कर्मयोग, निष्काम कर्म, समत्वबुद्धि तथा आत्मज्ञान आधारित दर्शन जीवन और कार्य दोनों के लिए एक व्यवहारिक मार्गदर्शिका सिद्ध होता है। इस शोधपत्र का उद्देश्य गीता के प्रमुख सिद्धांतों का अकादमिक विश्लेषण करते हुए उसकी समकालीन प्रासंगिकता को स्पष्ट करना है।

मुख्य शब्द (Keywords): श्रीमद् भगवद् गीता, कर्मयोग, निष्काम कर्म, समत्वबुद्धि,जीवन-दर्शन, कार्य-संस्कृत, मार्गदशीका ।

भूमिका (Introduction)

भारतीय दार्शनिक परंपरा में श्रीमद् भगवद् गीता का स्थान अत्यंत विशिष्ट है। इसे न केवल धार्मिक ग्रंथ माना गया है, बल्कि जीवन-दर्शन का सार्वकालिक ग्रंथ भी स्वीकार किया गया है। गीता का उपदेश उस समय दिया गया जब अर्जुन कर्तव्य, करुणा, मोह तथा भय के द्वंद्व में मानसिक रूप से विचलित हो गया था। यह स्थिति आधुनिक मानव की मनोदशा से अत्यंत साम्य रखती है।

आधुनिक समाज में भौतिक प्रगति के साथ-साथ मानसिक अशांति, नैतिक मूल्यों का ह्रास तथा कार्यक्षेत्र में बढ़ता तनाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। ऐसे परिवेश में गीता का दर्शन मनुष्य को संतुलित जीवन जीने तथा कर्तव्यनिष्ठ कर्म करने की प्रेरणा प्रदान करता है। विद्वानों का यह मत हैं कि विश्व की एसी कोई समस्या नहीं हैं कि जीनका उपाय श्रीमद्भगवद् गीता में न हों। अतः गीता जीवन और कार्यो के लिए मार्गदर्शिका हैं।

2. साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

गीता पर प्राचीन एवं आधुनिक काल में अनेक विद्वानों द्वारा टीकाएँ एवं व्याख्याएँ प्रस्तुत की गई हैं। शंकराचार्य ने गीता को अद्वैत वेदान्त के आलोक में व्याख्यायित किया है, जबकि रामानुजाचार्य ने भक्ति को उसका केंद्रीय तत्व माना है।माध्वाचार्य़ कहते हैं कि नि।काम कर्म की महत्त गीता में निरूपित है। वल्लभाचार्य गीता को व्याख्यायित करते हुए कहते है कि - केवल निवृत्तिपरायण पुष्टिमार्गीय भक्ति ही गीता का तात्पर्य है और इस हेतु से भगवानने **सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं वर्ज।**[1](18-61) अंत मे अर्जुन को यह उपदेश किया हैं। श्री लोकमान्यतिलक अनुसार गीता कर्मयोग की प्रेरणा प्रदान करनेवाला ग्रन्थ है। तिलक के मतानुसार गीता मात्र मोक्षशास्त्र ही नही, परंतु कर्तव्याकर्तव्य का विचार करनेवाला नीतिशास्त्र भी है। अरवींद घोषने गीता को जीवनशास्त्र माना है, और व्यवहार में आनेवाली एक कसोटी का सार्वत्रिक एक ही उकेल माना हो। श्री अरविंद के अनुसार गीता कर्म, ज्ञान और भक्ति का समन्वय प्रस्तुत करती है। आधुनिक युग में डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने गीता को मानवतावादी दर्शन के रूप में व्याख्यायित किया है। महात्मा गांधीजीने अनासक्तियोग के उपदेश को महत्त्व का माना है।

इन सभी अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि गीता एक बहुआयामी ग्रंथ है, जिसकी प्रासंगिकता केवल धार्मिक नहीं, बल्कि सामाजिक एवं व्यावहारिक भी है।[1]

3. शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study)

प्रस्तुत शोधपत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. श्रीमद् भगवद् गीता के मूल दार्शनिक सिद्धांतों का अध्ययन करना।
2. कर्मयोग एवं निष्काम कर्म की अवधारणा का विश्लेषण करना।
3. आधुनिक जीवन एवं कार्यक्षेत्र में गीता की प्रासंगिकता को स्पष्ट करना।
4. गीता को एक व्यवहारिक जीवन-मार्गदर्शिका के रूप में प्रतिपादित करना।

4. अनुसंधान पद्धति (Research Methodology)

यह शोध गुणात्मक (Qualitative) प्रकृति का है। अध्ययन में प्राथमिक स्रोत के रूप में श्रीमद् भगवद् गीता के मूल श्लोकों का उपयोग किया गया है। द्वितीयक स्रोतों के अंतर्गत प्रमाणिक टीकाग्रंथ, शोध-पुस्तकें, पत्रिकाएँ एवं विद्वानों के लेखों का संदर्भ लिया गया है। विश्लेषणात्मक एवं विवेचनात्मक पद्धति के माध्यम से निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हैं।

---

1. श्रीमद् भगवद् गीता 18 -61, गीता प्रेस, गोरखपुर।

5. गीता का जीवन-दर्शन

गीता का जीवन-दर्शन आत्मा की अमरता के सिद्धांत पर आधारित है–

"न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।

अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे" (गीता 2.20)[2]

यह सिद्धांत मनुष्य को शोक, भय एवं निराशा से मुक्त करता है। जब व्यक्ति यह समझ लेता है कि आत्मा अविनाशी है, तब जीवन के संकट उसे विचलित नहीं कर पाते। यही दृष्टि व्यवहारिक जीवन में स्थिरता प्रदान करती है।

6. कर्मयोग : कार्य के लिए व्यवहारिक मार्ग

गीता का केंद्रीय सिद्धांत कर्मयोग है–

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।।" (2.47)[3]

इस पद्य में कर्मयोग की चतुःसूत्री नीहित है। तेरा कर्म करने का हि अधिकार है, फल में कदापि नाहि, कर्मों में फलका अधिकारी मत बन, और कर्म न करने में भी तेरी प्रीति न होनी चाहिए। यह चार सूत्र को मनुष्य आपने जीवन में स्थापित करता हैं तो संसार के कई समस्याओं का निवारण हो जाता है। हम सिर्फ अपना कर्म नैकी से करते रहे तो भी जीवन उत्तम बना सक्ते है। कर्मयोग व्यक्ति को यह सिखाता है कि वह फल की चिंता किए बिना अपने कर्तव्य का पालन करे। आधुनिक कार्यक्षेत्र में यह सिद्धांत कार्य-दबाव, असफलता-भय तथा मानसिक तनाव को कम करता है। न हि कश्चितक्षणमपि जातु ति।ठत्यकर्मकृत्। श्रीमद् भगवद्गीता मनुष्य को व्यवहार में परमार्थसिद्धि की कला शिखाता है।उनका आशय कर्तव्य कर्म कराना है, छोडाना नहि। अतः भगवान कर्मयोग और ज्ञानयोग दोंनों साधनो में कर्मयोग करने की बात करता हैं।

7. निष्काम कर्म और मानसिक शांति

गीता के अनुसार दुःख का मूल कारण कर्म नहीं, बल्कि फलासक्ति है। निष्काम कर्म मनुष्य को अहंकार से मुक्त करता है और आंतरिक शांति प्रदान करता है। ***तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसंगः समाचर।*** *(3-9)*[4] यदी हम कोई कर्म फल की अपेक्षा से करते है, पर हम चाहते है एसा कुछ भी नही होता तब हम बहुत दुःखी, खीन्न मना बन जाते है। इस स्थिति में हमे गीता के निष्काम कर्मयोग का स्मरण करनो होगा जो हमे **इदम् कृष्णाय इदम् न मम।** अतः हमारे मन मे कोई राग, द्वेष का भोव होता है तो वह नष्ट हो जाता है, और मानसिक शान्ति प्राप्त होती है।मन की यह अवधारणा आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में अत्यंत उपयोगी सिद्ध होती है।

---

2. श्रीमद् भगवद् गीता 2.20, गीता प्रेस, गोरखपुर।
3. श्रीमद् भगवद् गीता 2.47, गीता प्रेस, गोरखपुर।
4. श्रीमद् भगवद् गीता 2.48, गीता प्रेस, गोरखपुर।

8. समत्वबुद्धि: जीवन संतुलन का आधार

"समत्वं योग उच्यते" (2.48)।[4]

भगवान अर्जुन को कहते है कि- हे अर्जुन, आसक्ति का त्याग करके, सफलता और असफलता दोनों में समभाव बनाए रखो और भगवान पर भरोसा रखते हुए योग में स्थिर रहो। ऐसा समभाव ही योग कहलाता है। समत्वबुद्धि व्यक्ति को सुख-दुःख, लाभ-हानि एवं सफलता-असफलता में समान दृष्टि बनाए रखने की प्रेरणा देती है। यही मानसिक संतुलन सफल जीवन का आधार है।भगवान को प्रसन्न करने की इच्छा का त्याग करके, केवल भगवान के लिए, सफलता और असफलता दोनों में समभाव बनाए रखते हुए, अर्थात् मानसिक शुद्धता के फल स्वरूप ज्ञान की प्राप्ति हो या न हो या उसमें बाधा उत्पन्न हो, सुख-दुख के विक्षोभों से मुक्त होकर अपने कर्म करो। क्योंकि फल की प्राप्ति और असफलता दोनों में समभाव बनाए रखना ही योग कहलाता है।

योगी बनने का अर्थ है संगति का त्याग करना। अर्थात्, फल प्राप्ति की खोज को छोड़ देना।

पतंजलि योग सूत्र कहता है कि योगिश्चित्तवृत्तनिरोध: - योग का अर्थ है मन की प्रवृत्तियों का निवारण। अर्थात्, मन को प्रवृत्तियों के रूप में वस्तुओं में लीन होने से रोकना और उसे आत्मा के रूप में स्थिर करना समभाव कहलाता है।

योगः कर्मसु कौशलम्। *(2-50)*[5]कर्म योग में, समभाव (दृष्टि) वाला व्यक्ति पुण्य और पाप दोनों का त्याग कर देता है। इसलिए, समभाव योग के लिए तैयार रहें, क्योंकि कर्मों में निपुणता ही वह योग है। (यह बंधन से मुक्ति का साधन है)।

9. गीता और कार्य-संस्कृति

गीता कार्य को केवल आजीविका नहीं, बल्कि साधना मानती है। कर्तव्यनिष्ठा, अनुशासन, ईमानदारी तथा सेवा-भाव–ये सभी आदर्श कार्य-संस्कृति के मूल तत्व हैं। आधुनिक प्रबंधन शास्त्र में गीता को *Spiritual Management Manual* [6]के रूप में स्वीकार किया गया है। गीता में श्री कृष्ण अर्जुन को वैराग्य की ओर नहीं ले जाना चाहते। वे युद्ध के अनेक कारण बताते हैं, अतः ***तस्मात् युद्धस्व भारत, तस्मात् उतिष्ठ कौंतेय, तस्मात् असत्यः सततं कार्यं कर्म समाचर–*** बार-बार यह कहते हुए वे अर्जुन को कर्म पर दृढ़ और निर्णायक उपदेश देते हैं। अंत में, वे अर्जुन से पूछते हैं कि क्या उसने इस गीता के उपदेश को एकाग्र मन से सुना है? क्या अज्ञान से उत्पन्न तुम्हारा भ्रम नष्ट हो गया है? फिर अठारहवें अध्याय में, अर्जुन कहते हैं कि

नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्पर्सादान्मयाच्युत।
स्थतोऽस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचनं तन।। (गीता 18-73)[7]

---

5. श्रीमद् भगवद् गीता 2.50, गीता प्रेस, गोरखपुर।

6. श्रीमद् भगवद् गीता 18.73, गीता प्रेस, गोरखपुर।

यहां अर्जुन न केवल युद्ध करने का संकल्प लेते हैं, बल्कि वास्तव में युद्ध भी करते हैं। गीता के अनुसार, स्वधर्म के अनुसार जो भी कर्तव्य प्राप्त हो (चाहे वह युद्ध जैसा घातक कार्य ही क्यों न हो), जीवन का सार उसे मृत्यु तक निरंतर करते रहना है। "क्या मुझे युद्ध करना चाहिए या नहीं?" - गीता धर्म का रहस्य यह है कि अपने कर्तव्य को लेकर असमंजस में पड़े अर्जुन को अपने कर्तव्य का निष्पाप मार्ग मिल जाता है और वे क्षत्रिय धर्म का पालन करते हुए शास्त्रानुसार कार्य करने के लिए तत्पर हो जाते हैं।

अतः अपने कल्याण की प्रबल इच्छा रखने वाला व्यक्ति हर परिस्थिति में परमत्त्व को प्राप्त कर सकता है; युद्ध जैसी विकट परिस्थिति में भी व्यक्ति अपना कल्याण प्राप्त कर सकता है - इस प्रकार, व्यवहारमात्र से व्यक्ति कैसे परमार्थ प्राप्त कर सकता है? इसकी कला गीता में सिखाई गई है।

10. आधुनिक जीवन में गीता की प्रासंगिकता

आज का मानव तनाव, अवसाद और नैतिक भ्रम से ग्रस्त है। गीता आत्मसंयम, विवेक तथा कर्तव्यबोध द्वारा इन समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करती है। विद्यार्थी, कर्मचारी, प्रशासक और गृहस्थ– सभी के लिए इसके सिद्धांत समान रूप से उपयोगी हैं।

डॉ. राधाकृष्णन ने कहा है कि 'यदि किसी शास्त्र का माप इस बात से होता है कि वह मानव मन पर कितना प्रभाव डालता है, तो गीता भारतीय विचार परंपरा की सबसे प्रभावशाली रचना है।' गीता जैसा सरल शास्त्र, जो आत्मज्ञान के रहस्यमय और पवित्र तत्वों को संक्षिप्त रूप से स्पष्ट करता है और उसी के आधार पर प्रयास द्वारा मनुष्य को आध्यात्मिक पूर्णता प्रदान करता है, न केवल संस्कृत साहित्य में बल्कि विश्व साहित्य में भी नहीं मिलता। इस प्रकार, जीवन और संसार के रहस्यों को समझने की अपार अंतर्दृष्टि और उससे प्राप्त सत्यों के अनुसार जीवन को संवारने की इच्छा ही भारतीय संस्कृति का सार है। हम देखते हैं कि मानव संस्कृति के इतिहास में कई बार अभ्यास और ईश्वर को न केवल अलग-अलग बल्कि एक-दूसरे के विरोधी मानने की प्रवृत्ति उभरी है। परन्तु गीता में अभ्यास और सिद्धांत का सामंजस्य है। इस अर्थ में, गीता केवल एक सिद्धांत नहीं बल्कि एक व्यावहारिक शास्त्र है। यह एक सार्वभौमिक और गैर-सांप्रदायिक धार्मिक शास्त्र है। आइए हम इसे केवल एक धार्मिक शास्त्र के रूप में ही देखें। अतः उनके व्यापक विचारों का अपमान होता है। वे न केवल धर्म में आस्था रखते हैं, बल्कि बुद्धि के मानकों को भी बनाए रखने का प्रयास करते हैं। गीता के विभिन्न अध्याय एक व्यापक और संपूर्ण दर्शन का सार हैं।

मनुष्य अपने व्यावहारिक जीवन में आध्यात्मिक, दार्शनिक और दिव्य तीनों प्रकार के दुखों से ग्रस्त दिखाई देता है। उसे इन दुखों से मुक्ति पानी है। भगवद् गीता का उद्देश्य मानव जाति को संसार के अज्ञान से मुक्त करना है। प्रत्येक मनुष्य अनेक प्रकार से कष्टों में है। केवल अर्जुन ही नहीं, बल्कि

हम सभी इस संसार के कारण चिंतित हैं। दुख भोग रहे इस जनसमूह में से कुछ ही मनुष्य वास्तव में अपने अस्तित्व और अपनी पहचान के बारे में सोचते हैं? जब तक मनुष्य अपने अस्तित्व और उससे संबंधित दुखों के बारे में प्रश्न करने की चेतना प्राप्त नहीं कर लेता और यह नहीं समझ लेता कि वह दुख नहीं चाहता, बल्कि सभी दुखों का समाधान चाहता है, तब तक उसे पूर्ण मनुष्य नहीं कहा जा सकता। जब मनुष्य के मन में इस प्रकार की जिज्ञासा जागृत होती है, तभी उसमें मानवता का जन्म होता है।

11. निष्कर्ष (Conclusion)

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि श्रीमद् भगवद् गीता केवल आध्यात्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि जीवन और कार्य दोनों के लिए एक सम्पूर्ण व्यवहारिक मार्गदर्शिका है। इसका कर्मयोग, समत्वदर्शन और निष्काम कर्म सिद्धांत आधुनिक युग की समस्याओं का प्रभावी समाधान प्रस्तुत करता है। गीता का संदेश काल, देश और समाज की सीमाओं से परे सार्वकालिक सत्य के रूप में मानवता का मार्गदर्शन करता रहेगा

संदर्भ सूचि

1. डॉ. राधाकृष्णन, *भारतीय दर्शन*, राजपाल एंड संस, दिल्ली।
2. श्रीमद् भगवद् गीता 2.20, गीता प्रेस, गोरखपुर।
3. वही, 2.47।
4. वही, 2.48।
5. श्री अरविंद, *Essays on the Gita*, Sri Aurobindo Ashram, Pondicherry।
6. स्वामी विवेकानंद साहित्य, रामकृष्ण मठ, बेलूर।
7. 1. 'भारतीय दर्शन' खंड-I, जी. एलन एंड अनविन लिमिटेड, लंदन 1951, पी-519.

संदर्भ ग्रन्थ सूचि

1. श्रीमद्भगवद्गीता।शंकराचार्यभाष्यसहित।गीताप्रेसगोरखपुर।
2. मद्भगवद्गीता(सरस्वतीकृतमधुसूदनगूढ़ार्थदीपिकाव्याख्यासहित)(व्याख्याकार) अग्रवालमदनमोहन।चौखम्बासंस्कृतप्रतिष्ठान,वाराणसी।(२०१३)
3. श्रीमद्भगवद्गीता, व्याख्याकारराधाकृष्णन्एस., राजपालएण्डसन्स, दिल्ली।(१९६९)
4. ગીતારહસ્યયાનેકર્મયોગશાસ્ત્ર, બાલગંગાધરતિલક.
5. શ્રીમદ્ભગવદ્ગીતાસંપાદકશાસ્ત્રીસી.એલ, દ્વેપી.સી.,અખિલહિન્દપ્રકાશન, અમદાવાદ. દ્વિતીયસંસ્કરણ. (૧૯૬૮)

6. श्रीमद्भगवद्गीता,સંપા,ઝાલા,સુહાસ.સરસ્વતીપ્રકાશન,અમદાવાદ. પ્રથમઆવૃત્તિ. (૨૦૦૨)
7. Shree Patanjalyogdarshan with Rhashyadipikatika- Pujya Naththu mahraj, (Aanand Aashram Bilkha -Saurashtra) Publisher Shri Hrajivan Shah, 1999.